तृतीय समसत्र (संस्कृत प्रतिष्ठा)
षष्ठम पत्रम

1. एक श्लोक की संस्कृत में व्याख्या करें

श्रिय: कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम् ।
स वर्णिलिङ्गी विदित: समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचर: ॥

या

या सृष्टि: स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्त: श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।
यामाहु: सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिन: प्राणवन्त:
प्रत्यक्षाभि: प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीश: ॥

~~2. किरात~~
2. किरातार्जुनीयम महाकाव्य के प्रथम सर्ग का कथासार लिखें ?

या

"अभिज्ञानशाकुन्तलम्" के चौथे (चतुर्थ) अंक की विशेषता को बतलायें ?

तृतीय समसत्र / संस्कृत प्रतिष्ठा
सप्तम - पत्रम्

1. याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार संस्कारों की व्याख्या करें ?
या
रुद्रदामन के जूनागढ़ लेख का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक महत्व पर प्रकाश डालें।

तृतीय समसत्र संस्कृत (प्रतिष्ठा)
पंचम - पत्र

1. रामायण के रचना-काल की समीक्षा करें?
या
महाभारत के रचना-काल तथा वर्ण्य विषय की समीक्षा करें?

2. रामायण तथा महाभारत की विभिन्न दृष्टिकोणों से तुलनात्मक समीक्षा कीजिए?
या
महाकाव्य वि तथा गीतिकाव्य का अन्तर स्पष्ट करें?

तृतीय समसत्र (संस्कृत प्रतिष्ठा)
षष्ठम पत्र